मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया का प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विस्तार विभाग ने मनाया अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस

नई दिल्ली, 9 सितंबर, 2025

8 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के रूप में दुनिया भर में मनाया जाता है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने भी इस दिन को धूमधाम से मनाया जब प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विस्तार विभाग (DACEE) ने ASEM LLL हब रीज़नल सेंटर, साउथ एशिया द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम " अचीविंग डिजिटल लिटरेसी... विल एक्सेस सॉल्व द प्रोब्लम?" में भारतीय समयानुसार दोपहर 2:00 से 3:00 बजे तक ZOOM पर भाग लिया।

प्रो. (डॉ.) शिखा कपूर, DACEE की पूर्व अध्यक्ष और साक्षरता एवं विस्तार विशेषज्ञ, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, भारत से चर्चा में शामिल हुईं। अन्य अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों में डॉ. जान शिलर, प्रोफेसर, हेल्मट श्मिट यूनिवर्सिटी/ यूनिवर्सिटी ऑफ़ द फेडरल आर्म्ड फोर्सेस, हैम्बर्ग, जर्मनी शामिल थे। ASEM LLL Hub की दक्षिण एशिया समन्वयक और कोपेनहेगन, डेनमार्क स्थित फोरम फॉर लाइफलॉन्ग लर्निंग की संस्थापक निदेशक डॉ. शालिनी सिंह ने भारत जैसे निम्न-मध्यम आय वाले देशों और जर्मनी जैसे उच्च आय वाले देशों के सामने आने वाली डिजिटल साक्षरता की समस्याओं पर चर्चा का नेतृत्व किया।

जामिया के आसपास की झुग्गियों में किये गए अपने काम और सरकारी कार्यक्रमों के विश्लेषण के आधार पर, प्रो. शिखा कपूर ने विस्तार से बताया कि कैसे भारत में डिजिटल साक्षरता, खासकर महिलाओं, ग्रामीणों और समाज के वंचित वर्गों के लिए, एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। उन्होंने अपने तर्कों को पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय में प्रौढ़ शिक्षा और प्रसार के क्षेत्र में किये गए शोध और क्षेत्रीय गतिविधियों पर स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि बुनियादी साक्षरता प्रदान करना भारत में दोहरे हाशिये और डिजिटल विभाजन को दूर करने का एक तरीका हो सकता है।

दूसरी ओर, हैम्बर्ग स्थित डॉ. शिलर ने डिजिटलीकरण पर अपनी हालिया परियोजनाओं के आँकड़े साझा किये और तर्क दिया कि जर्मनी और यूरोप के कई अन्य देशों ने पहुँच के अधिकांश मुद्दों को हल करने में कामयाबी हासिल की है। हालाँकि, चुनौती मुख्य रूप से जनसंख्या को प्रदान किये जा रहे ज्ञान और कौशल की गुणवत्ता में डिजिटल विभाजन के संदर्भ में बनी हुई है। इसके अलावा, उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि कैसे दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में डिजिटलीकरण की कई प्रक्रियाएँ उपयोगकर्ता-अनुकूल नहीं हैं, और यह कई उपयोगकर्ताओं को विकास प्रक्रिया की मुख्यधारा से बाहर कर देती हैं।

डॉ. शालिनी ने डेनमार्क के अपने अनुभव साझा करते हुए बढ़ते मैथ्यू प्रभाव पर प्रकाश डाला, जहाँ डिजिटलीकरण की बढ़ती गति और कम कुशल लोगों के लिए समर्थन की कमी के कारण वृद्ध आबादी हाशिये पर जा रही है, जबकि उच्च कुशल लोग बढ़ते मैथ्यू प्रभाव से लाभान्वित हो रहे हैं। वयस्कों की शिक्षा के लिए संसाधन जुटाने पर अपने शोध का हवाला देते हुए, उन्होंने पाया कि जिन लोगों के पास डिजिटल तकनीक तक पहुँच थी, उन्होंने इसका उपयोग साक्षरता के बजाय रील-कल्चर और अन्य सोशल मीडिया जुड़ाव के लिए किया।

दुनिया भर के कई शिक्षाविदों, चिकित्सकों, शोधार्थियों और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के छात्रों ने इसमें भाग लिया और चर्चा की कि भारत में विशाल संसाधनों का उपयोग करने वाली कई नीतियों,

कार्यक्रमों और पहलों के बावजूद, साक्षरता प्राप्त करने के मामले में परिणाम सीमित हैं और भारत में साक्षरता का स्तर अभी भी खराब है। दक्षिण एशिया के ASEM लाइफलॉन्ग लर्निंग हब क्षेत्रीय केंद्र के समन्वयक ने इस बात पर प्रकाश डाला कि ASEM एक अंतर-सरकारी निकाय है जिसमें यूरोप और एशिया, यूरोपीय संघ और आसियान के 51 देश शामिल हैं, और ASEM लाइफलॉन्ग लर्निंग हब की भूमिका आजीवन शिक्षा को बढ़ावा देने में है। इसका दक्षिण एशिया केंद्र इसी क्षेत्र पर केंद्रित है।

कार्यक्रम का समापन आयरलैंड के कॉर्क विश्वविद्यालय के माननीय ASEM LLL हब अध्यक्ष प्रो. सीमस ओ' तुआमा के संदेश के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सीखने में सभी को शामिल करने तथा डिजिटल उपकरणों की तरह अपने अंगूठे का उपयोग कर दूसरों को सिखाने में सहायता करने की बात की।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी